International Journal ofAdvanced ResearchAnd Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 490-491

डॉ० ज्ञानी देवी जी के 'सात फेरों का कर्ज' कहानी संग्रह में नारी के विविध रूप

उपासना
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गौड़ ब्राह्मण महाविद्यालय, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

नारी देह गाथा को शब्द चित्रों में बाँधने का साहसिक कार्य करने वाली लेखिकाओं में ज्ञानी देवी जी बहुचर्चित है। ज्ञानी देवी जी की रचना प्रक्रिया की सफलता उनके नारी पात्रों के चित्रण में एक अलग विशेषता है। मुख्यतया नारी-पुरुष संबंधों में पुरुष की प्रतिक्रियाओं और नारी मन को एक अलग स्थान प्राप्त करती है। नारी के प्रभावशाली बनने की प्रक्रिया में नारी-पुरुष संबंधों में जटिलता आती चली गई। इस जटिलता का चित्रण और नारी का खुलापन व आदर्शता ज्ञानी देवी जी समकालीन महिला रचनाकारों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाती हैं।

नारीत्व का बीज रूप में यशोगान किया गया जो आगे चलकर अंकुरित और पल्लवित होता हुआ एक विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर लेता है, जिसकी शीतल सुखद छाया में लोक को विश्राम मिलता है।

नारी का अपना ही महत्त्व है। वह जगत् जननी है, संसार का निर्माण करने वाली है। मानव जाति के उद्धार के लिए उसका जन्म हुआ है। इतना सब कुछ होते हुए भी प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल में भी नारी पर विभिन्न प्रकार से शोषण, अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं।

'सात फेरों का कर्ज' कहानी संग्रह में नारी के विविध रूपों के निम्नलिखित बिन्दुओं को आंका जाता है जो इस प्रकार है -

नारी का उपेक्षित मातृत्व

नारी का सर्वोत्तम रूप उसका मातृत्व है। क्योंकि इसी के माध्यम से वह एक ओर संसार की सृष्टि में योगदान देती है तो और वह अपना नारीत्व उसके द्वारा सफल बनाती है। मातृत्व में एक अतुल शक्ति है जो संसार का संचालन करती है। उसका स्थान बहुत ऊँचा है। नारी केवल माता है, उसके उपरान्त वह जो कुछ भी है वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र है। इसी कारण 'सात फेरों का कर्ज' कहानी में लेखिका ने मौजी सिंह की माता के मातृत्व और उसकी पीड़ा को व्यक्त किया है-

"बेटे ! घर तो यही है पर तू शायद मौजी का दोस्त होगा? वह तो नहीं है बेटा यहाँ। उसे तो 22 साल हो चुके यहाँ से गये। अब तो आँखों की ज्योति भी जाती रही बेटा! पर वे नहीं आया।आँसूओं के समुद्र सूख गये बेटा! पर वो नहीं पसीजा। तेरे आगे क्या रोना बेटा। सोचती हूँ आज नहीं रोऊँगी [1]।"

त्याग और समर्पण की भावना

नारी अनेक गुणों से सम्पन्न तथा महान गुणों पर आचरण करने वाली होनी चाहिए। नारी के प्रमुख गुण उसका सौंदर्य नहीं बल्कि उसका चरित्र है। यदि वह सुचरित्र है तो समाज में मान्य है, यदि दुश्चरित्र है तो समाज में निन्दनीय है। इसी प्रकार से लेखिका ने 'सात फेरों का कर्ज' कहानी-संग्रह में संतोष के माध्यम से भारतीय नारी में त्याग और समर्पण की भावना को दिखाया है व उसकी सास उसके त्याग व समर्पण के बारे में बताती है - "मेरी बहू देवी है। मौजी ने पेट पड़कर बदला ले लिया और इस बेगानी जाई ने मुझे जीने का सहारा दिया बेटा ! दोनों सास बहू हम 22 सालों में एक-एक पल इस बच्चे के लिए तेल की धानी की तरह पिसते रहे हैं। धन्य हो वो बाप जिसने ऐसी बेटी जन्मी। बहुत बड़ा जिगर है बेटा संतोष का, कभी महसूस नहीं होने दिया मुझे कि मैंने उससे अन्याय किया, कि मेरे बेटे की वजह से उसकी पूरी जिंदगी रेत में रूल गई, कभी नहीं। आज उसी के सब्र का फल है कि इस दहलीज पर यह खुशी का मौका आया है [2]।"

भारतीय नारी का आदर्श रूप

भारतीय नारी का यही आदर्श रूप रहा है कि वे पति का परमेश्वर मानकर अपना जीवन व्यतीत करती रहें। प्राचीन काल में तो वे पति की मृत्यु पर अपना शरीर अग्नि को समर्पित करके सती भी हो जाती थी। इसी प्रकार से लेखिका ने 'सात फेरों का कर्ज' कहानी संग्रह में संतोष के माध्यम से आदर्श रूप में भारतीय नारी को प्रकट किया है - "सब अपने-अपने भाग्य से मिलता है जी। हर कदम पर औरत को अग्नि परीक्षा और कसौटियों से दो चार होना ही पड़ता है, भले ही राम ने

जन्म लेना छोड़ दिया पर सीता और अहिल्या तो बार-बार जन्म लेती रहेंगी जी। इस मिट्टी में ही कुछ ऐसा है जो उन्हें पुनर्जन्म देता ही रहेगा [3]।"

आत्म गौरव की रक्षा के लिए विद्रोह करती नारी

सौंदर्य परमात्मा की देन है। इसको छिपाया नहीं जा सकता। इसी प्रकार से नारी को जहाँ काम करने का अवसर मिलता है, वहाँ पर कुछ ऐसी नकारात्मक सोच के पुरुष होते हैं। जिनकी मानसिकता में कचरा भरा होता है। ऐसे में नारी को अपनी आत्म रक्षा करनी चाहिए। लेखिका ने भारतीय नारी के माध्यम से कड़े शब्दों में आत्म रक्षा के लिए विद्रोह करती वह नारी को दर्शाया - "मुझे इस घटना के बाद ऐसी सोच के आवारा सांड, बेरोक-टोक नहीं घूम सकते कि यहाँ भी हरा चारा देखा और घुस आये मुँह मारने। उन्हें औरतों को औरत ही समझना होगा, वस्तु नहीं [4]।"

आदर्श भाभी के रूप में नारी

भारतीय समाज में आज भी नारी अपना आदर्श रूप दिखा रही है और दिखाती रहेगी। क्योंकि एक भाभी ने अपनी ननद के लिए अपनी इज्जत को गंवाया है। उसने अपने पति व समाज से सिर को नीचे किया है। लेखिका ने भूमा के माध्यम से एक आदर्श भाभी की भूमिका को दर्शाया है - "प्लीज ! आप मेरी ननद को छोड़ दीजिए। क्योंकि आज.... आज रक्षाबन्धन है। .....मेरे पति....को भी.....प्लीज ! दोनों बहन-भाईयों को छोड़ दीजिए। क्योंकि ..... कल ही मेरी ननद की सगाई के लिए लड़के वाले उसे देखने आ रहे हैं। उसकी जिंदगी खराब मत कीजिए। हम-हम किसी से कुछ नहीं बताएँगे. ..पर आप उसे छोड़कर मुझे....चाहे...तो कई दिन....अपने.....पास रख लीजिए [5]।"

अन्धविश्वास का खण्डन करने वाली नारी

समाज में अन्धविश्वास का बोलबाला है। क्योंकि 'करवा चौथ' का व्रत सब जगह मनाया जाता है। लेकिन पूरे समाज में स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घ आयु के लिए व्रत को रखती हैं और पति द्वारा शोषण व अत्याचार किये जाते हैं। इसी प्रकार से इस अन्धविश्वास को दूर करने के लिए कुशला जैसी शिक्षित महिला ने अपनी भूमिका निभाई-"मैंने प्रण लिया है कि जब तक एक बहन भी दुखी है तब तक हम सब इस व्रत को नहीं मनायेंगे।" कहकर कुशला ने कुएं से एक बाल्टी पानी निकालकर सबसे पहले खुद पानी पीकर व्रत को तोड़ दिया। उसके देखा-देखी उपस्थित सभी औरतों ने भी यही किया [6]।"

संदर्भ

1. डॉ॰ ज्ञानी देवी 'सात फेरों का कर्ज' कहानी संग्रह, पृ॰ 24
2. डॉ॰ ज्ञानी देवी 'सात फेरों का कर्ज' कहानी संग्रह, पृ॰ 24
3. डॉ॰ ज्ञानी देवी 'सात फेरों का कर्ज' कहानी संग्रह, पृ॰ 29
4. वही, पृ॰ 19
5. डॉ॰ ज्ञानी देवी 'सात फेरों का कर्ज' कहानी संग्रह, पृ॰ 112
6. वही, पृ॰ 81